पाठ ११ : रहीम के दोहे

लेखक : रहीम

विषय :हिन्दी कक्षा : सातवीं

हस्त पत्रक

प्रस्तुतकर्ता : प्रतिभा रोकड़े (परमाणु ऊर्जा केन्द्रीय विद्यालय-३,तारापुर

****

रहीम का जीवन परिचय- :

रहीम का पूरा नाम अब्दुल रहीम (अब्दुर्रहीम) ख़ानख़ाना था। इनका जन्म 17 दिसम्बर 1556 को लाहौर में हुआ। ये बैरम खां के पुत्र थे। रहीम अकबर के नवरत्नों में से एक थे और अकबर के दरबार में इनका महत्त्वपूर्ण स्थान था। रहीम मध्ययुगीन दरबारी संस्कृति के प्रतिनिधि कवि थे। अकबरी दरबार के हिन्दी कवियों में इनका महत्त्वपूर्ण स्थान है। इन्होंने अरबी, फ़ारसी, संस्कृत, हिन्दी आदि का गहन अध्ययन किया। राज-दरबार में अनेक पदों पर कार्य करते हुए भी साहित्य में उनकी रूचि बनी रही। उनके काव्य में नीति, भक्ति-प्रेम तथा श्रृंगार आदि के दोहों का समावेश है।

रहीम ने अपने अनुभवों को सरल और सहज शैली में प्रस्तुत किया। वे अनेक भाषाओं के ज्ञाता थे। उन्होंने ब्रज भाषा, पूर्वी अवधी और खड़ी बोली का उपयोग अपने काव्यों में किया। गहरी से गहरी बात भी उन्होंने बड़ी सरलता से अपनी रचनाओं में प्रस्तुत किया। मुस्लिम धर्म के अनुयायी होते हुए भी रहीम ने अपनी काव्य रचना द्वारा हिन्दी साहित्य की जो सेवा की वह अद्‌भुत है। रहीम की कई रचनाएँ दोहों के रूप में प्रसिद्ध हैं। रहीम दोहावली, बरवै, नायिका भेद, मदनाष्टक, रास पंचाध्यायी, नगर शोभा आदि इनकी प्रमुख रचनाएं हैं।

रहीम के दोहे:

कहि रहीम संपति सगे,बनत बहुत बहु रीत ।
बिपति कसौटी जे कसे,तेई साँचे मीत ।।

प्रसंग:

रहीम दास जी के दोहे के माध्यम से सच्चे मित्र की परिभाषा को बताया है ।

व्याख्या:

रहीम दास जी कहते है कि जब हमारे पास संपत्ति होती है तो लोग अपने आप हमारे सगे, रिश्तेदार और मित्र बनाने की प्रयास करते है लेकिन सच्चे मित्र वो ही होते है,जो विपत्ति या विपदा आनेपर भी हमारे साथ बने रहते है ।वही हमारे सच्चे मित्र होते है उनका साथ हमें कभी नहीं छोड़ना चाहिए।

जाल परे जल जात बहि,तजि मीनन को मोह ।
रहिमन मछरी नीर को,तऊँ न छाडति छोह ।।

प्रसंग:
इस दोहे में अहिम दास जी ने जल के प्रति मछली के एक तरफ़ा प्रेम को दर्शाया है ।
व्याख्या:
रहीम दास जी कहते है कि जब मछली पकड़ने के लिए जल में जाल डाला जाता है तो अल बहकर बाहर निकल जाता है ।वह मछली के प्रति अपना मोह त्याग देता है लेकिन मछली का प्रेम जल के प्रति इतना अधिक होता है कि वह जल से अलग होते ही अपने प्राण त्याग देती है , यही सच्चा प्रेम है।

तरुवर फल नहीं खात है,सरवर पियत न पान ।
कहि रहीम परकाज हित,संपति-सचहिं सुजान ।।

प्रसंग:
रहीम दास जी ने इस दोहे में मनुष्य में पाए जाने वाले परोपकार की भाव को प्रकट किया है अर्थात दूसरों की भलाई करना ।
व्याख्या:
रहीम दास जी कहते है कि जिस प्रकार वृक्ष अपने फल कभी नहीं खाता सरोवर अपने द्वारा संचित किया गया जल कभी नहीं पीता उसी प्रकार सज्जन और विद्वान लोग अपने द्वारा संग्रह किए गए धन का उपयोग अपने लिए नहीं बल्कि दूसरों की भलाई में करते है ।

थोथे बादर क्वार के ,ज्यों रहीम घहरात ।
धनी पुरुष निर्धन भए ,करे पाछिली बात ।।

प्रसंग:
रहीम दास जी इस दोहे के माध्यम से बताना चाहते है कि, मनुष्य निर्धन होने के बाद भी पुराने दिनों के ऐश्वर्य की बाते करते रहते है ।
व्याख्या:
रहीम दास जी कहते है कि जिस प्रकार आश्विन के महीने में जो बादल आते है वे थोते होते है । वे केवल गरजते है लेकिन बरसते नहीं है । उसी प्रकार धनी पुरुष निर्धन होने पर अपने सुख में बिताए हुए दिनों की बातें करता रहता है । वह अपने सुख में बिताए हुए पलों को याद करते रहते है लेकिन आपने वर्तमान स्थिति में कोई सुधार नहीं करते है।

धरती की-सी रीत है,सीत घाम औ मेह ।
जैसी परे सो सहि रहे,त्यों रहीम यह देह ।।

प्रसंग:
इस दोहे में रहीम दास जी ने मनुष्य के शरीर की तुलना धरती से की है।
व्याख्या:
रहीम दास जी कहते है कि जिस प्रकार हमारी धरती सर्दी,गर्मी, बरसात के मौसम को एक समान भाव से झेल लेती है । सी प्रकार हमारे शरीर में भी वैसे ही क्षमता होनी चाहिए हम जीवन में आने वाले परिवर्तन और सुख-दुख को सहज रूप से स्वीकार कर सके ।

****